फीसदी), पंजाब (9.57 फीसदी), बिहार (8.56फीसदी), सिज़्किम (7.96फीसदी), मेघालय (7.41 फीसदी) और छत्तीसगढ़ (4.34 फीसदी) में पशुओं की आबादी में बढ़ोतरी दर्ज की गई है। पशुधन गणना के अनुसार, दुधारू भैंसों की संज़्या 48.64 मिलियन से बढ़कर 51.05 मिलियन हो गई है जो कि पिछली पशुधन गणना से 4.95 प्रतिशत अधिक है। देश में भेंड़ों की संज़्या 65.06 मिलियन है। इसमें पिछली पशुधन गणना से 9.07 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। बकरियों की संज़्या में पिछली पशुधन गणना की तुलना में 3.82 प्रतिशत की कमी आई है। ऊंटों की संज़्या में पिछली पशुधन गणना की तुलना में 22.48 प्रतिशत की कमी आई है। मुर्गी पालन में 12.39 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

भैसों की नस्ल

मुर्रा: ये सबसे प्रमुख किस्म है। इसे दिल्ली भैस के नाम से भी जाना जाता है। पंजाब, उज़र प्रदेश और राजस्थान में पाई जाती है। दस माह की अवधि में इसका औसतन दूध उत्पादन 1500 कि.ग्रा. से लेकर 2000 कि.ग्रा. तक होता है।

नीली-राकी: यह भैंस पंजाब में पाई जाती है। यह 250 दिन में लगभग 1600 कि.ग्रा. तक दूध देती है।

भदवारी: यह उप्र की देशी भैंस है, जो मध्य प्रदेश और राजस्थान में भी पाई जाती है। इसकी 305 दिनों में 2000 कि.ग्रा. से अधिक दूध देती है।

नागपुरी: भैंस की इस प्रजाति को गुलानी, बेरारी, गौली नामों से भी जाना जाता है। यह मुज़्य रूप से महाराष्ट्र में पाई जाती है, जो 1000 कि.ग्रा. तक दूध देती है।

माण्डा: भैस की इस किस्म को परलाकीमेडी और गंजाम नाम से भी पुकारा जाता है। भैंस की यह प्रजाति आंध्र प्रदेश में पाई जाती है।

सुर्ती: यह गुजरात में पाई जाने वाली प्रजाति है, जो लगभग 2000 कि.ग्रा. तक दुग्ध उत्पादन करती है।

जफरबादी: गुजरात में पाई जाने वाली भैंस की यह अत्यधिक दुधारू प्रजाति है, जो प्रतिदिन 16 कि.ग्रा. दूध देती है।

मेहसाना: यह भैंस मुर्रा और सुर्ती की संकर से उत्पन्न प्रजाति है।

टोडा: नीलगिरि प्रजाति में यह पाई जाती है। यह प्रतिदिन लगभग 7 कि.ग्रा. तक दूध देती है।